Paper - VI

MT

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - PRELIM - I - PAPER - VI

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. **(क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

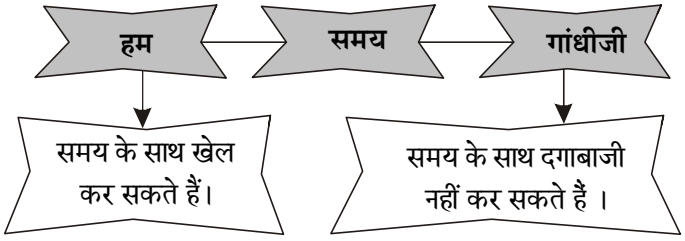

ii) **परिच्छेद में प्रयुक्त उंगलियों के नाम -** **1**

(1) तर्जनी (2) अँगूठा

2) i) **सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।** **1**

(1) सत्य

(2) असत्य

ii) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।**

(1) **दगाबाजी** - बापू समय के साथ क्या नहीं कर सकते थे ? ½

(2) **बापू** - समय पर स्नान किसने किया ? ½

3) i) **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी परिच्छेद में से ढूँढ़कर लिखिए।**

(1) संध्या - शाम ½

(2) सीख - सबक ½

3) ii) **विलोम शब्द लिखिए।**

(1) निश्चित × अनिश्चित ½

(2) देरी × जल्दी ½

4) जब कोई कार्य निर्धारित समय किया जाए तो ही उसे समय की नियमितता कहा जाता है। प्रत्येक कार्य का समय निश्चित कर लेने से हमारे सभी कार्य ठीक से और समय पर पूरे हो जाते हैं। इससे किसी कार्य के छूटने या समय पर न होने का नुकसान नहीं होता। समय की नियमितता सफलता की कुंजी है। उचित समय पर कार्य न करने से पूरा कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाता है। अत: हम नियमित होकर अपने जीवन में बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) उत्तर लिखिए। **2**

i) भ्रष्टाचार से।
ii) विशुद्ध दूध बेचने से।
iii) दस सेर।
iv) भ्रष्टाचार के।

2) i) **समझकर लिखिए।** **1**

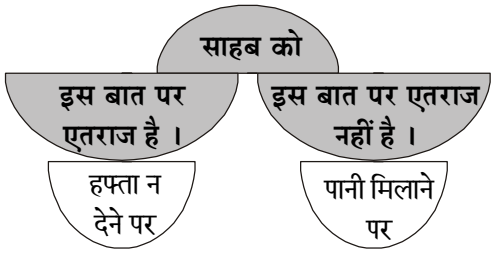

ii) **सही पर्याय चुनकर पूर्ण वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) फूड इंस्पेक्टर तब सैंपल की बोतल भर लेता **जब किसी ग्वाले के दूध में पानी होता।** ½
(2) पानी तो मिलाया ही कर वरना **तू क्या खाएगा और हम क्या खाएँगे ?** ½

3) i) **लिंग बदलिए।**

(1) ग्वाला - ग्वालिन ½
(2) मालिक - मालकिन ½

ii) **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायी शब्द लिखिए।**

(1) देहात - गाँव ½
(2) कचहरी - अदालत ½

4) दूध में पानी मिलाना अच्छी बात नहीं होती है। यह तो एक प्रकार का भ्रष्टाचार है। दूध में पानी मिलाकर यदि कोई पैसा कमा रहा है, तो यह कानून की नजर में गुनाह है। ऐसा आदमी दूध में पानी मिलाकर अपने ही देश बंधुओं के साथ नाइंसाफी कर रहा है। दूध हमारी संस्कृति में पवित्र माना जाता है और उसमें ही पानी **2**

मिलाकर हम अपनी सभ्यता एवं सदाचार को सदा के लिए मिटा रहे हैं। अत: हमें दूध में पानी नहीं मिलाना चाहिए।

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) समझकर लिखिए। 1

(i) पौष्टिक भोजन (ii) व्यायाम

2) उत्तर लिखिए। 1

(i) शरीर में शुद्ध रक्त का संचार होना। (ii) भोजन का ठीक से पचना। (iii) शरीर का पुष्ट बन जाना। (iv) मस्तिष्क का स्वस्थ रहना।

3) व्यायाम से मानसिक तनाव और थकान मिटती है। शरीर का रक्त शुद्ध हो जाता है तथा पूरे शरीर में ताजगी आती है। व्यायाम यदि खुले स्थान में या किसी पार्क में किया जाए तो अधिक लाभ मिलता है। फेफड़ों को शुद्ध वायु पर्याप्त मात्र में मिलती है। पेशियों और अस्थियों को ताकत मिलती है। शरीर का दर्द और ऐंठन मिट जाती है। ज्ञानेन्द्रियों में सजगता आती है। संपूर्ण शरीर प्राकृतिक दशा में कार्य करने लगता है। शारीरिक दुर्बलता और सुस्ती समाप्त हो जाती है। इस तरह व्यायाम के प्रभाव से शरीर में नवजीवन का संचार होता है। बूढ़े और बीमार लोग भी अपने भीतर स्फूर्ति का अनुभव करने लगते हैं। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** 1

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** 1

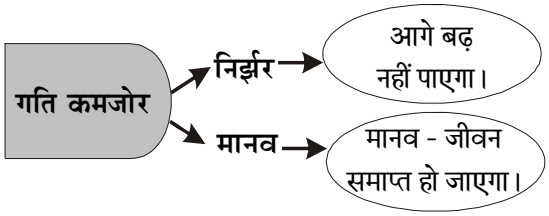

2) i) **समझकर लिखिए।**

(1) नाविक अपनी नाव पानी में नहीं उतारता है क्योंकि वह लहरों से डरता है। ½

(2) जीवन में उन्नति-अवनति होती रहती है। ½

ii) **उत्तर लिखिए।** ½

(1) जब उसकी गति रुक जाएगी।

(2) **सही शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।** ½

निर्झर का जीवन उसकी गति है।

3) i) **मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द लिखिए -**

(1) निरझर - निर्झर ½

(2) घड़िया - घड़ियाँ ½

ii) **पद्यांश से तुकान्त शब्दों की जोड़ियाँ बनाकर लिखिए -**

(1) पछताता है - जाता है ½

(2) जिस दिन - गिन - गिन ½

4) जीवन रूपी झरने की लहरें उठती -गिरती रहती हैं अर्थात् जीवन में उन्नति-अवनति आती रहती है। यदि किसी ने अपने जीवन में समय आने पर उसका सदुपयोग नहीं किया तो उसे उसी प्रकार से पश्चाताप भी करना पड़ता है, जिस प्रकार से लहरों से डरकर नाविक अपनी नाव झरने में नहीं उतारता है। इस प्रकार जीवन रूपी झरना अपनी जवानी की राह पर आगे बढ़ता ही जाता है। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) **कृति पूर्ण कीजिए।**

i) **1**

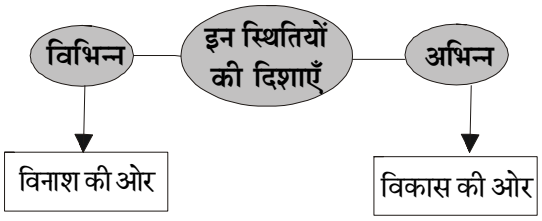

ii) **1**

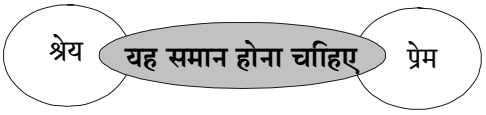

2) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

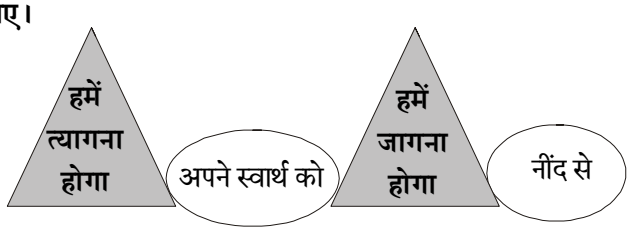

ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) हमें लोककर्म जैसा महान कर्म करना है।

(2) उफान का भाव हो। उठान का भाव हो।

3) i) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(1) विभीन्न - विभिन्न ½

(2) स्रेय - श्रेय ½

ii) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।**

(1) समान × असमान ½

(2) प्रेम × घृणा ½

4) अभावग्रस्त इंसान के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए देशप्रेमी कवि 'जनगीत' कविता के माध्यम से नए भारत को बनाने की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि स्पष्ट कर रहे हैं कि विनाश के समय हम अलग– अलग हो गए थे, पर अब हम भारत के विकास में एकजुट हो रहे हैं। अब सबको समान यश मिलेगा। सभी लोग प्रेम से रहेंगे और सभी छोटे - बड़े एक समान होंगे। **2**

विभाग 3 - पूरक पठन

उ.3. **पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।**

(1) **नरेश का निवासस्थान** - दूर जंगल में नदी के तट पर बनाई हुई एक पर्णकुटी में ½

(2) **नरेश की पसंद -** राजमहल की शान - शोभा और वैभव से दूर रहना । ½

	ii) **समझकर लिखिए।** (1) श्वेतवर्ण (2) बड़ा आकर्षक	 ½ ½
2)	'खेल' मानवी जीवन का एक प्रमुख अंग होता है। खेल से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। खेलने से मन प्रसन्न हो जाता है। खेल भाईचारा, शांति व प्रेम का प्रतीक होता है। वर्तमान युग में खेल का महत्त्व बढ़ रहा है। देश-विदेश में खेलों एवं उसे खेलने वाले खिलाड़ियों को सम्मान प्राप्त हो रहा है। क्रिकेट, बास्केट बॉल, हॉकी आदि खेल अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर खेले जाते हैं। अत: खेल समूचे विश्व का एक प्रमुख अंग बन गया है।	**2**
	विभाग 4 - व्याकरण	
उ.4.	**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
1)	i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** महादेवी के संस्मरण लोकप्रिय हैं ।	½
	ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** चालीस - विशेषण	½
2)	**निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए ।** क्रोध से उसके नेत्र लाल हो गए ।	**1**
3)	i) **निम्नलिखित सहायक क्रियाओं का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **देना** - वाणी की खोज छोड़ दीजिए ।	½
	ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** गई (जाना) - सहायक क्रिया	½
4)	**प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **क्रिया** — **प्रथम प्रेरणार्थक** — **द्वितीय प्रेरणार्थक** भूलना — भुलाना — भुलवाना	**1**
5)	i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** अच्छा ! आपका खोया हुआ भाई मिल गया ।	**1**
	ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** लिए : संबंधसूचक अव्यय	**1**

6) **कालपरिवर्तन कीजिए ।** **2**

i) वह हिमालय को खोजता है ।

ii) वह हिमालय को खोज रहा था ।

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** **1**

हृदय में घुल जाना - कोई बात अंदर तक पहुँच जाना ।

वाक्य : महात्मा की बात मेरे **हृदय में घुल गई ।**

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

गरीब रामू पढ़-लिखकर **अपने पैरौं पर खड़ा हो गया** ।

विभाग 5 - रचना

उ.5. परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए :- **5**

सागर शर्मा
105 / जवाहर चौक,
मुंबई।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
जवाहर विद्यालय, गोरेगाँव,
मुंबई ।

विषय : लिपिक पद के लिए प्रार्थनापत्र ।

माननीय महोदय,

मैंने नवभारत टाइम्स में कल पढ़ा कि आपके विद्यालय में लिपिक की जरूरत है । उक्त पद के लिए मैं आवेदन पत्र भेज रहा हूँ ।

मेरे संबंध में जानकारी इस तरह है :

एस.एस.सी. परीक्षा – मार्च, 2011 (प्रथम श्रेणी)

एच.एस.सी. परीक्षा – मार्च, 2013 (प्रथम श्रेणी)

संगणक का अनुभव –तीन वर्ष

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे अवसर मिला तो अपने आपको एक अच्छा और जिम्मेदार लिपिक साबित करने का प्रयास करूँगा ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
सागर शर्मा ।

संलग्न प्रमाणित प्रतिलिपियाँ :
1) एस.एस.सी. प्रमाण पत्र के साथ अंकतालिका ।
2) एच.एस.सी. प्रमाण पत्र के साथ अंकतालिका ।
3) संगणक संबंधी अनुभव प्रमाण पत्र ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
जवाहर विद्यालय,
गोरेगाँव,
मुंबई ।

प्रेषक
सागर शर्मा
105/ जवाहर चौक,
मुंबई ।

अथवा

रवि सावंत,
05 माधव कुंज, मंदिर मार्ग,
सिंधुदुर्ग ।
15 सितंबर ,2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापकजी,
प्रगति बुक सेंटर,
पूणे - 411 003

विषय : पुस्तकें मँगाने के लिए माँगपत्र।

माननीय महोदय,

स्थानीय समाचार पत्र 'आज का आनंद' में आज ही प्रगति बुक सेंटर का विज्ञापन देखा, जिसमें 50 % मूल्य में पुस्तकें तथा संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध कराने की बात कही गई है ।

मैं विज्ञापन में दी गई निम्नलिखित पुस्तकें खरीदना चाहता हूँ । कृपया पत्र मिलते ही ये पुस्तकें उपर्युक्त पते पर वी.पी.पी. द्वारा भेजने का कष्ट करें । पुस्तकों के मूल्य में 50 % छूट का बिल साथ में भेजें ।

इस पत्र के साथ पेशगी के रूप में 300 रुपए का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ । शेष रकम की वी.पी.पी. कर दें, जो यहाँ छुड़ा ली जाएगी ।

पुस्तकों के नाम :

1) प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियाँ - एक प्रति		2) नीरज की पाती - एक प्रति	
3) हिंदी - अंग्रेजी शब्दकोश - एक प्रति		4) हिंदी व्याकरण रचना - तीन प्रति	

आशा है, पुस्तकें शीघ्र भेजने की व्यवस्था करेंगे ।
सधन्यवाद !

आपका विश्वासु,
रवि सावंत

टिकट

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापकजी,
प्रगति बुक सेंटर,
पूणे - 411 003

प्रेषक
रवि सावंत,
05 माधव कुंज, मंदिर मार्ग,
सिंधुदुर्ग ।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए । 5

कुसंगति का फल

कई साल पहले की बात है । एक घना जंगल था । जंगल के बीच में एक तालाब था । उसमें हमेशा पानी भरा रहता था । पेड़ों पर तरह-तरह के पक्षी रहते थे । तालाब में एक राजहंस रहता था । उसका रंग-रूप बहुत ही सुंदर था । तालाब के पास ही बरगद के पेड़ पर एक कौआ रहता था । वह राजहंस का रंग-रूप देखकर उससे बहुत जलता था ।

एक दिन एक शिकारी उस जंगल में आया । वह बहुत थका हुआ था, इसलिए उस बरगद के पेड़ के नीचे आकर बैठ गया। कुछ सोच रहा था कि अचानक उसे नींद आ गई । कुछ देर बाद पेड़ के पत्तों में से छनकर सूरज की तेज किरणें शिकारी के मुँह पर पड़ने लगी । यह देखकर राजहंस को शिकारी पर दया आई ।

पेड़ की डाली पर बैठकर राजहंस ने अपने बड़े-बड़े पंख फैला दिए और शिकारी के मुँह पर फिर से छाया कर दी । दुष्ट कौए से हंस की भलाई और शिकारी का आराम नहीं देखा गया । उसने सोचा कि यदि किसी तरह शिकारी को जगा दिया जाए तो उस हंस का नामोनिशान न रहे । फिर वह तुरंत शिकारी के सिर पर बीट करके उड़ गया । इससे शिकारी जाग गया । उसने ऊपर पेड़ पर राजहंस को देखकर उसी को दोषी माना । उसने क्रोधित होकर अपने तीर से उस हंस को मार डाला ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि दुष्ट पड़ोसी से बचकर रहना चाहिए ।

3) निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनका उत्तर एक वाक्य में लिखा जा सके । 5

(1) भाषा की सार्थकता किसमें है ?
(2) वार्तालाप की शिष्टता से मनुष्य को क्या लाभ होता है ?
(3) मधुर वचन किस प्रकार प्रभाव डालते हैं ?
(4) सामाजिक व्यवहार के लिए क्या आवश्यक है ?
(5) शब्दों का जादू क्या कर सकता है ?

उ.6. **1) विज्ञापन लेखन । (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

''आई-आई आइस्क्रीम आई शीतल-शीतल 'ठंडक' लाई !"

बड़े-बूढ़ों को ललचाए !'
मीठा स्वाद और मीठी महक
खाते ही आप महसूस करेंगे
कुछ ठंडा-ठंडा कूल-कूल
पैक का मूल्य - 20.00 रु./-

अनूठे स्वादों मे भरपूर

सभी जगह उपलब्ध । अनमोल प्रॉडक्ट, मुंबई ।

2) स्वमत : (लगभग 60 से 80 शब्दों में) **5**

कानून की नजर में लड़का-लड़की एक समान होते हैं । हमें उनमें भेद नहीं करना चाहिए । विज्ञान और तकनीकी के इस युग में हमने इतनी प्रगति कर ली है, फिर भी हम लिंग भेद जैसी कुभावनाओं कुरीतियों के शिकार हो रहे हैं । आज भी चोरी चुपके लिंग का परीक्षण हो रहा है और कई माता-पिता लड़के की चाहत में अपनी लड़कियों को इस दुनिया में आने से पहले ही कोख में मार डालते हैं । कई डॉक्टर भी अधिक पैसों के लालच में इस प्रकार का घिनौना कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं । यह अनैतिक, असामाजिक कार्य है, लड़की देवी का रूप होती है । वह 'कल्पना' होती है । वह 'लता-आशा' होती है । वह 'किरण' बनकर 'स्वराज' की भाँति संसद में आम जनता के हित के लिए आक्रामक भी हो जाती है । अत: लड़की की रक्षा करना, उसकी हिफाजत करना हम सभी का कर्तव्य है। हम सबको मानवता के इस कार्य में सम्मिलित होना चाहिए और 'बेटी बचाओ आंदोलन' को प्राथमिकता देनी चाहिए ।

3) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- (60 से 80 शब्दों में) **5**

1) **परीक्षा शुरू होने से पहले एक घंटा**

जिंदगी के हर मोड़ पर परीक्षा का सामना करना पड़ता है । कुछ परीक्षाएँ औपचारिक होती हैं और कुछ अनौपचारिक । परीक्षा चाहे जो भी हो दिल की धड़कने तो बढ़ जाती हैं । वैसे तो परीक्षाओं का सिलसिला प्रारंभिक शिक्षा से ही शुरू हो जाता है परंतु दसवीं की परीक्षा का जो अनुभव हुआ है, वह यादगार बन गया है ।

वर्षभर की जी तोड़ मेहनत का मूल्यांकन सिर्फ तीन घंटे की परीक्षा द्वारा किया जाता है इसलिए बोर्ड की परीक्षा में बैठते समय बड़े-बड़ों को पसीना छूटने लगता है । हालांकि मेरी तैयारी बहुत अच्छी थी, फिर भी मन में एक डर था । दादा-दादी को प्रणाम करके, माता-पिता के साथ परीक्षा-भवन की तरफ बढ़ा। बार-बार भगवान से यही प्रार्थना कर रहा था कि हे भगवान मैं परीक्षा में अच्छा कर सकूँ ।

मेरे विद्यालय से कुछ दूरी पर ही परीक्षा-केंद्र था । जैसे ही वहाँ पहुँचा तो देखा कि काफी तादाद में परीक्षार्थी व उनके अभिभावक इकट्ठा थे। सबके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं । उनको परेशान देखकर मैं

अपना धीरज खो रहा था । माता-पिता बच्चों को शुभ-कामनाएँ दे रहे थे। परीक्षा के प्रति बच्चों को तो आश्वस्त कर रहे थे पर खुद अंदर ही अंदर डरे हुए थे । परीक्षा-भवन में बैठते ही परीक्षा-संबंधी घोषणाएँ होने लगी। उस आवाज को सुनते ही घबराहट और बढ़ने लगी । एक हूक-सी उठने लगी । उस एहसास को शब्दों में बता पाना बड़ा मुश्किल है । कुछ ही समय बाद अभिभावकों को विद्यालय के परिसर से बाहर निकल जाने के लिए कहा गया । माँ खिड़की से झाँकते हुए जब मुझसे विदाई ले रही थी तो मेरा मन रो उठा । मन हुआ दौड़कर जाऊँ और कसकर उनके हाथों को पकड़ लूँ पर तब तक पर्यवेक्षक कक्षा में आ चुके थे। उनको देखते ही चेहरा डर के मारे स्याह हो चुका था, मानो काटो तो खून नहीं ।

मैंने अपने-आपको संभालने की बहुत कोशिश की। सोचा कि डर से अपना मन हटाने के लिए अच्छा है कि दिमाग को किसी काम में लगाऊँ। जो कुछ याद किया है, मन-ही-मन उसे दोहराऊँ। पर यह क्या ? सबकुछ उल्टा-पुल्टा हो गया था। सब गायब हो रहा था। शुरुआत 'मध्य' अंत सभी की अच्छी खिचड़ी बन गई थी। मैं और भी अधीर होने लगा। मेरी ही कक्षा में एक लड़की घबराहट के मारे उल्टियाँ करने लगी। उसकी हालत देखकर तो मैं और भी परेशान हो गया। पर्यवेक्षक महोदय तो यमदूत की तरह लग रहे थे। परीक्षा के बारे में बहुत सारे नियमों की बात कह रहे थे पर मेरे कानों तक एक शब्द नहीं पहुँच पा रहा था। हालाँकि वह देखने में तो बड़े सख्त लग रहे थे पर उन्होंने अपनी मधुर भाषा से धीरे-धीरे कक्षा के वातावरण को सहज बना दिया। उन्होंने हमारा हौसला बढ़ाया और परीक्षा से पहले भगवान की प्रार्थना करने के लिए कहा। मैंने आँखें बंद की और भगवान को याद किया, इसके बाद एक और चेहरा था जो मेरी बंद पलकों के बीच ठहर गया था । वह थी मेरी माँ 'फ्लेश बैक' - कहानी की तरह कुछ ही पलों में काफी चीजें मेरी बंद आँखों में घूमने लगी । परीक्षा तो मेरी थी पर पूरे साल माँ की दौड़-धूप, मुझसे पहले जागना, मेरे बाद सोना ..... । उनके लिए बाकी चीजें गौण थी और मैं प्रमुख । मैं नहीं चाहता था कि बेवजह का मेरा डर माँ की सारी कोशिशों पर पानी फेर दे । आँख खुलने पर थोड़ा सहज महसूस करने लगा । ईश्वर की प्रार्थना से प्राप्त शक्तियाँ, माँ के चेहरे से निकला वह तेज, या फिर दोनों के सम्मिलित भावों से ऐसा असर हुआ कि मैं परीक्षा के लिए पूरी तरह आश्वस्त और तैयार हो चुका था । बड़ी हिम्मत और भरोसे के साथ मैंने परीक्षा प्रश्नपत्र को अपने हाथों में लिया ।

आज मैं एक सफल व्यापारी बन गया हूँ । व्यापार के बहुत सारे उतार-चढ़ाव को नियंत्रित कर लेता हूँ। दसवीं की परीक्षा के एक घंटे पहले का अनुभव आज भी मुझे डरा देता है । आज भी अगर कोई डरावना सपना देखता हूँ तो वह यह कि मैं परीक्षा देने के लिए परीक्षा भवन में बैठा हूँ और परीक्षा लिखते समय किसी उत्तर का अंत भूल रहा हूँ तो किसी का आरंभ ।

2) **मेरा प्रिय शिक्षक** **5**

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता है । मानव जीवन में शिक्षा का महत्व सर्वोपरि है । मुझे अनेक अध्यापकों ने ज्ञान की गंगा में स्नान करवाया है परंतु हमारे प्रिय शिक्षक राधेश्याम तिवारी हैं । उनके जैसा हिंदी कोई नहीं पढ़ाता है । उनका पढ़ाने का तरीका औरों से अलग है। पढ़ाते समय भाव विभोर होकर पढ़ाते हैं । सारे छात्र उन्हें मंत्र-मुग्ध होकर सुनते हैं । 'बालिका का परिचय' कविता पढ़ाते समय पूरी तरह भाव में डूब जाते हैं ।

तिवारी जी का व्यक्तित्व और अध्यापकों से अलग है । गोरा चेहरा, साफ-सुथरा वस्त्र पहन कर साईकिल चलाते हुए जब विद्यालय आते हैं तब लोगों के आकर्षण के केंद्र हुआ करते हैं । गाँव में लोगों के सामाजिक व धार्मिक कार्यों में समय निकालकर जरूर आते हैं ।

आज विद्यालयों में नए-नए शिक्षक आ गए हैं परंतु उनके अंदर बच्चों के भविष्य की कोई चिंता नहीं है । अपने कार्य को बोझ समझते हैं। बच्चों में पढ़ाई के प्रति जो उत्साह लाना है, नहीं ला पाते । तिवारी जी अपनेपन की भावना से पढ़ाते हैं । अपनी जिम्मेदारी का उन्हें पूरा एहसास रहता है ।

तिवारी जी को हिंदी का बड़ा ज्ञान है । उन्हें हिंदी के अलावा अन्य कई भाषाओं का ज्ञान है । व्याकरण पढ़ाते समय उदाहरण देकर बच्चों को समझाना उनकी शैली हैं । उनके जैसा पढ़ाने का ढंग किसी भी अध्यापक में नहीं है । वे बड़ी सूझ-बूझ से अपना कार्य करते रहते हैं । बच्चों को नैतिक शिक्षा का भी ज्ञान देते रहते हैं । उनके मार्गदर्शन में रहकर आज हमारा जीवन सुखी है । मेरे परिवार के लोग उनका बड़ा सम्मान करते हैं ।

तिवारी जी क्रिकेट के बड़े शौकीन हैं । हर रविवार को स्कूल में बच्चे क्रिकेट खेलते हैं तो वे बड़े चाव से देखते हैं । हमारे बहुत सारे मित्र उन्हें अपना आदर्श मानते हैं । भारत पाकिस्तान क्रिकेट मैच देखने के लिए वे चेन्नई तक चले जाते हैं । इससे उनके मन में खेलों के प्रति प्रेम झलकता है ।

विद्यालय के हर कार्यक्रम में वे बच्चों के साथ स्नेह भरा व्यवहार करते हैं । पुरस्कार वितरण समारोह में वे बड़े उत्साहपूर्वक बच्चों का हौसला बढ़ाते हैं । तिवारी जी विद्यालय को अपना दूसरा घर समझते हैं ।

तिवारी जी स्वभाव के सरल, ईमानदार और शिक्षा प्रेमी हैं । कोई गरीब बच्चा अगर पैसे की वजह से पढ़ नहीं पा रहा है तो उसकी फीस तक भर देते हैं । उनके मन में सद्भाव उमड़ता रहता है । ऐसे शिक्षक ही राष्ट्र का नव निर्माण कर सकते हैं ।

❖❖❖❖